Breastfeeding Promotion Network of India (BPNI)
Regional Coordinator for International Baby Food Action Network (IBFAN),
Asia Pacific

**प्रेस विज्ञप्ति**

# स्तनपान – नीति एवं कार्यक्रमों में भारत की स्थिति दयनीय

**नई दिल्ली :** भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मन्त्रालय की सचिव श्रीमति रेवा नैयर ने नई दिल्ली में आयोजित 'राज्यों के महिला एवं बालविकास सचिवों के सम्मेलन' में *''विश्व स्तनपान स्थिति : भारत-2005-एक रिपोर्ट कार्ड''* जारी किया, जिसमें भारत की स्थिति को अत्यन्त दयनीय दर्शाया गया है । इस अवसर पर श्रीमति रेवा नैयर ने कहा कि ''यह रिपोर्ट कार्ड भारत में स्तनपान कार्यक्रमों और नीतियों की समीक्षा का एक ईमानदार आकलन है'' । इसके माध्यम से भारत में उस ''शिशु एवं बाल पोषण पर विश्व रणनीति-2002'' को लागू करने की प्रगति के वास्तविक दर्शन होते है, जिसे मई-2002 में 'विश्व स्वास्थ्य महासभा' में सभी राष्ट्रों के साथ भारत ने भी अंगीकृत और स्वीकृत किया था । यह रिपोर्ट कार्ड भारत के सामने एक ऐसा आईना (दर्पण) बनकर उपस्थित हुआ है, जिसमें भारत की नीतियों एवं कार्यक्रमों के साथ-साथ इस दिशा में किये जा रहे परिणामकारक कार्यकलापों को विभिन्न मार्गदर्शी-सूचकों के माध्यम से दर्शाया गया है । इसमें भारत को 160 में से केवल 69.5 अंक मिले है और चार रंगो (हरा-उत्कृष्ट, नीला-बहुत अच्छा, पीला-अच्छा नहीं और लाल-खराब हेतु) के माध्यम से दियें गयें रेंक में भारत को पीला रेंक दिया गया है, जो भारत में स्तनपान की स्थिति को किसी भी प्रकार से अच्छा घोषित नहीं करता हैं ।

श्रीमती रेवा नैयर ने इस रिपोर्ट कार्ड के आकलन एवं मूल्यांकन के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि इसमें भारत का आकलन 15 मार्गदर्शी सूचकों के माध्यम से किया गया है, जिसमें दस सूचक नीति एवं कार्यक्रमों और पाँच सूचक परिणामकारक कार्यकलापों के लिये थें । इसमें प्रत्येक सूचक ने कुछ प्रश्नों के समूह पर आधारित होकर कुछ अंक निर्धारित किये हैं और अन्ततः रंगों के आधार पर एक रेंक स्थापित किया है । इस रिपोर्ट कार्ड का विश्लेषण करने पर जो परिणाम प्राप्त हुऐ उसमें भारत को कुल पन्द्रह में से 'पाँच-लाल', 'आठ-पीले', और केवल 'दो-हरे' स्कोर प्राप्त हुए है जो भारत में स्तनपान के क्षेत्र में अत्यन्त निम्न स्तर की उपलब्धि को दर्शाता है । यह स्थिति शिशु एवं बाल पोषण के क्षेत्र को वरियता सूची में रखते हुए प्रभावी संसाधनों के आवंटन और समन्वित कार्यवाही करने की आवश्यकता की ओर इशारा करती है । इस रिपोर्ट कार्ड में मातृत्व-संरक्षा, एचआईवी एवं शिशुपोषण और आपात स्थितियों में शिशु एवं बाल पोषण के क्षेत्र में भारत की स्थिति को लाल रंग में दर्शाया जाना इस बात का द्योतक है कि यहाँ स्थिति अत्यन्त दयनीय है । वहीं दूसरी और सामुदायिक स्वास्थ्य, शिशु अनुकूल चिकित्सालय प्रयास, स्वास्थ्य एवं पोषण देखभाल, सूचना आधारित सहयोग और पर्यवेक्षण एवं मूल्यांकन के क्षेत्र में भारत की स्थिति को पीले रंग में दर्शाया जाना भी कोई अच्छी स्थिति का द्योतक नहीं है, अतः इन सभी क्षेत्रों में भारत को अपनी स्थिति सुधारने की तत्काल आवश्यकता है ।

भारत में स्तनपान की प्रवृतियों की स्थिति को दर्शाने वाले इस रिपोर्ट कार्ड के अनुसार भारत में शिशु जन्म के बाद एक घण्टे के अन्दर केवल 15.8 प्रतिशत महिलायें ही स्तनपान करा पाती है, इसमें से आधी महिलायें ही अपने शिशुओं को छह महिने तक केवल स्तनपान ही कराती है और एक तिहाई महिलायें शिशुओं के लिए उचित पूरक-पोषण (शिशु के 6 महिने के होने के बाद) प्रदान करती है । इन प्रवृतियों के कारण ही 11 लाख बच्चों की पहले महिने में ही और पाँच लाख बच्चों की दूसरे से बारहवें महिने में मृत्यु हो जाती है । इनमें से दो तिहाई बच्चों की मृत्यु शिशु पोषण की दयनीय स्थितियों से ही संबंधित है ।

इस रिर्पोट कार्ड के सभी आकलन और मूल्यांकन भारत सरकार के साथ अन्तर्राष्ट्रीय बेबी फूड एक्शन नेटवर्क (आई.बी.एफ.ए.एन.) के क्षैत्रीय-समन्वय कार्यालय **''ब्रेस्ट फिडिंग प्रमोशन नेटवर्क ऑफ इण्डिया'' (बी.पी.एन.आई)** द्वारा अन्य सहयोगियों जैसे अखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थान (एम्स) के सामुदायिक स्वास्थ्य एवं बाल रोग विभाग और नेशनल नीयोनेटोलॉजी फोरम के द्वारा किये गये । इस आकलन के परिणामों को विश्व स्तनपान प्रवृति प्रयासों को समर्पित सॉफटवेयर 'डब्ल्यूबीटीआई' और ट्रैकिंग एसेसमेन्ट एवं मॉनीटरिंग सिस्टम के उपयोग से प्राप्त किये गये, यह एक वेब आधारित सॉफटवेयर टूल किट है जिसका उपयोग किसी देश में स्तनपान की प्रवृतियों के आकलन के लिए किया जाता है ।

इस रिर्पोट कार्ड के आधार पर **''ब्रेस्ट फिडिंग प्रमोशन नेटवर्क ऑफ इण्डिया'' (बी.पी.एन.आई)** के राष्ट्रीय समन्वयक डा. अरूण गुप्ता ने *अमेरिकन जर्नल ऑफ पेडएट्रीक्स* का हवाला देते हुए कहा कि जन्म के पहले घण्टे में ही स्तनपान कराने से 22 प्रतिशत शिशुओं की मृत्यु को रोका जा सकता है और यह तभी संभव है जब इस रिर्पोट कार्ड के मूल्यांकन को ध्यान में रखते हुए भारत को शिशुपोषण में सुधार हेतु विशेषकर जन्म से एक घण्टे के अन्दर ही और छह महीने तक केवल स्तनपान को प्रोत्साहित करने के कार्यक्रमों एवं कार्यवाहियों को समान्वित करने की दिशा में देश के नीति-निर्धारकों को विवशता नजर आये । उन्होने अपील की कि प्रधानमन्त्री को शिशुओं के अस्तित्व की रक्षा के लिये एक राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए 'राष्ट्रीय शिशु संरक्षण प्राधिकरण' स्थापित करना चाहिए क्योंकि यह रिर्पोट कार्ड तीन वर्ष बाद फिर से भारत की रेंकिंग करेगा तब तक भारत की स्थिति कम से कम संतोषजनक तो अवश्य होनी चाहिए ।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में शिशुरोग विज्ञान के प्रो. (डा.) विनोद पॉल के अनुसार यदि भारत में उचित शिशु पोषण की प्रवृति को सुचारू रूप से प्रोत्साहित किया जाये तो 15 प्रतिशत बच्चों को मृत्यु का ग्रास बनने से बचाया जा सकता है । उन्होंने राज्य सरकारों के सचिवों से अपील की कि सभी संबंद्ध पक्ष विशेषकर राज्य सरकारें इस बारे में मुख्य भूमिका अदा कर सकती है, जब कि केन्द्र सरकार इसके लिए समन्वित कार्ययोजना बनाये जिसका पर्यवेक्षण और मूल्यांकन समय-समय पर होता रहे क्योंकि राज्य सरकारों के पास पर्याप्त संसाधन होते है, जो सीधे माताओं तक अपनी पहुँच भी रखती है ।

''ब्रेस्ट फिडिंग प्रमोशन नेटवर्क ऑफ इण्डिया'' (बी.पी.एन.आई) के डॉ. जे.सी. सोबती ने एमजीडी टास्क फोर्स और विश्व बैंक की हाल में जारी रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्र की विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनीसेफ जैसी एजेंसियों को अपने बाल स्वास्थ्य कार्यक्रमों में स्तनपान को संरक्षण, प्रोत्साहन और समर्थन प्रदान करने के लिए इसका संज्ञान लेते हुए इसकी प्रत्येक स्तर पर हर प्रकार से पैरवी करनी चाहिए ।

---

**Dr. Arun Gupta (National Coordinator)** – Contact No. 9911176306
**Breastfeeding Promotion Network of India (BPNI) /**
**International Baby Food Action Network (IBFAN), Asia Pacific**
Tel: +91-11-27343608, 42683059
Tel/Fax: +91-11-27343606
Email: bpni@bpni.org
Website: www.bpni.org